2-6-'67 ओम शान्ति। प्रातः क्लास

शिव भगवानोवाच्य बच्चो प्रति। शिव भगवान को सभी बाबा तो कहेंगें ही। क्योंकि रचता है ना। ...
तुम बच्चे ही हो जिनको भगवान पढ़ाते हैं। तुम बच्चोंको कितनी खुशी होनी चाहिये। यह खुशी स्थाई
क्यो नही रहती है? तुमको भगवान पढ़ाते हैं भगवान भगवती बनाने। यह तो अच्छी रीती हर एक जानते
है। ऐसा कोई स्टुडण्ट होता नही जो अपने टीचर को पढ़ाई को और उसके रिजल्ट को नही जाने। तुम जानते
हो कि हमको कोई देहधारी मनुष्य नही पढ़ाते है। अशरीरी बाप शरीर मे प्रवेश कर खास तुम बच्चो को
पढ़ाने आये है। यह किसको भी पता नही है कि भगवान पढ़ाते है। कृष्ण को भगवान नही कहा जाता है।
नां कृष्ण कहते ही है कि मै पढ़ा रहा हूं। कृष्ण कहाँ है? कृष्ण की आत्मा इसी शरीर से फिर सतयुग मे
होगी। यह तो है भगवानोवाच्य। तुम जानते हो कि हम भगवान के बच्चे है। वो हमको पढ़ाते है।
वो ह ज्ञान का सागर है। शिव बाबा के सम्मुख तुम बैठे हो। आत्मायें और परमात्मा अभी ही मिलते है।
यह भूलो मत। परन्तु माया ऐसी है जो भुला देती है। नही तो वो नशा रहना चाहिये नां कि भगवान
हमको पढ़ाते है। उनको ही याद करते रहना चाहिये। परन्तु यहां तो ऐसे-2 है जो बिलकुल ही भूल जाते
है। कुछ भी नही जानते है। भगवान खुद कहते है कि बहुत बच्चे मुझको भूल जाते है। नही तो वो
खुशी रहनी चाहिये नां। हम भगवान के बच्चे है। वो हमको पढ़ा रहे है। माया ऐसी प्रबल है जो बिलकुल
ही भुला देती है। इन आखो से तो यह पुरानी दुनियां मित्र सम्बन्धी आदि देखते हो उनमे बुधी चली जा...
है। अब तुम बच्चो को बाप तीसरा नेत्र देते है। तुम शान्ति धाम सुखधाम को याद करो। यह है
दुःख धाम। यहां का है काग विष्ठा समान सुख। विषय सागर मे गोते खवाते रहते है। यह है छी-2
दुनियां। तुम जानते हो कि भारत स्वर्ग था। अब नर्क है। बाप आकर फिर फूल बनाते है। वहां तुमको 21
जन्म लिये सुख ही सुख मिलता है। उसके लिये ही पढ़ रहे हो। परन्तु पुरा नां पढ़ने कारन उनकी धन
दौलत आदि मे ही बुधी फंस जाती है। बुधी निकल नही सकती है। बाप कहते है कि शान्ति धाम और
सुखधाम तरफ बुधी ... गन्दी दुनियां सें तो एकदम जैसे चटकी हुई है। निकलते नही है। भल यहां
बैठे हो तो भी पुरानी दुनियां सें बुधी लटकी ही रहती है। अभी बाबा आया हुआ है गुल-गुल पवित्र बनाने।
तुम मुख्य तो पवित्रता के लिये ही कहते हो नां। बाबा हमको पवित्र बना कर पवित्र दुनियां में ले जाओ।
तो ऐसे बाप का कितना रिगार्ड रखना चाहिये। ऐसे बाबा पर तो कुरबान जाव तो जो कि परमधाम से
आकर हमको पढ़ाते है। बच्चो मे जोश भरने कितनी मेहनत करते है। एक दम किचेर गन्दे मे जैसे वि...
गन्द के टोकेर मे पडे थे। कहां तो स्वर्ग कहां पर यह नर्क। बाप आकर किचेर से निकालते है। अभी तुम
फूल बन रहे हो। जानते हो कि कल्प-2 बाप हमको ऐसा ही फूल (देवता) बनाते है। मानुष से देवता किये..
अभी हमको बाप पढ़ा रहे है। हम यहां मनुष्य से देवता बनने आये है। यह अभी तुमको पता पडा है।
पहले तो यह पता नही था कि हम कैसे स्वर्गवासी थे। अब बाप ने बताया है तुम स्वर्गवासी थे। फिर रावण
ने राज्य लूटा है। तुमने ही बहुत दुःख देखा है। फिर 84 जन्म लेते-2 सीढी नीचे ही उतरते आये हो।
यहां का तो कांग विष्टा समान सुख है। यह है छी-2 दुनियां। दुनियां। क्या हाल लगा हुआ है। अनाज
नही मिलता। कितने मनुष्य दुःखी है। लाखो मरते रहते है भूख से। कुछ भी सुख नही है। भल कितने
भी धनवान है तो भी वो अल्पकाल का कांग विष्टा समान सुख है। उसको कहा जाता है विषय वैतरणी
नदी। स्वर्ग मे तो हम बहुत सुखी होगें। अब तुम सांवरे से गौर बन रहे हो। यह तो कहेगें नां कि
भारत मे जो आदी सनातन देवी देवता धर्म वाले थे वो कहां गयें? अभी तुम समझते हो कि हम ही
देवता थे। फिर पुर्नजन्म लेते-2 वेशाल्य मे आकर पडे है। अभी फिर तुमको शिवाल्य मे ले जाते है।
शिव बाबा सतयुग की स्थापना कर रहे है। तुमको पढ़ा रहे है। तो अच्छी रीती पढ़ना चाहिये नां। पढ़
कर चक्र बुधी मे रख कर दैवी-गुण धारन करने चाहिये। कब भी मुख से कोई किचरा नही निकले। तुमहो

****